International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 468-472

प्रेमचंद की रचनाधर्मिता के विविध सोपान

डॉ0 सुरसरि तरंग मिश्र

प्रवक्ता–हिन्दी, उ0प्र0 सैनिक स्कूल, सरोजनी नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रेमचंद अपने सर्जनात्मक साहित्य में भी अपने विचारों का प्रचार करते रहे है। उनकी रचनाओं का उद्देश्य प्रजातांत्रिक भारत की स्थापना करना रहा है, इसलिए उन्होंने एक तरफ साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष किया है, दूसरी तरफ सामंतवादी सामाजिक परंपराओं पर भी चोट की है। वैसे कई बार प्रेमचंद किसी एक का सहारा लेकर भी दूसरे का विरोध कर देते हैं।'' (प्रेमचंद और भारतीय किसान–प्रो0 रामबक्ष, पृ0 97)

उद्देश्य

प्राध्यापकों–शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए रामबक्ष की पुस्तक 'प्रेमचंद और भारतीय किसान' एक मुकम्मल संदर्भ ग्रंथ है। प्रेमचंद के समग्र साहित्य में भारतीय किसान के सरोकारों का इतना व्यापक और विचारोत्तेजक पड़ताल एक बड़ी उपलब्धि है। विवेचना जितनी ही सहज भाषा में है, किंचित भारतीय किसान के संश्लिष्ट जीवन के रचाव–बसाव की खोज के उपक्रम में यह पुस्तक उतने ही सवाल–जवाब छोड़ती है और इसी सिलसिलें में प्रेमचंद के समय साहित्य के मूल्यांकन के लिए नई ऊर्जा भी देती है। पुस्तक में साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद और सामाजिक वर्ग के रूप में किसान की भूमिका की सम्यक एवं संतुलित विवेचना की गयी है। बीसवीं शताब्दी में भारत की राष्ट्रीय राजनीति में किसानों की पुरजोर भूमिका रही और उस भूमिका के सापेक्ष तत्कालीन बुद्धिजीवियों का जो चिन्तन रहा उसे प्रेमचंद की युगीन दृष्टि ने पहचाना और उस सांस्कृतिक वातावरण में एक नए स्वरूप को अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रस्तुत पुस्तक प्रेमचंद की नजरों से किसानों की परिस्थितियाँ, विद्यमान चेतना, स्वाभाविकगुण, समाज व्यवस्था, सांस्कृतिक दृष्टि, घर–गृहस्थी, मान, प्रतिष्ठा, लोक–लाज, आस्था–विद्रोह, असुरक्षा एंव पीड़ा सहित जीवन के सभी पहलुओं का अनुसंधान करती है। सबसे बड़ी बात है कि लेखक ने व्यापक ऐतिहासिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद को समग्रता में देखने–दिखाने की कोशिश की है, उदाहरण के लिए लेखक प्रेमचंद के यहाँ किसानों का महाजनों द्वारा या पुरोहितों, जमीदारों, द्वारा शोषण या अन्य मुद्दों को दिखाने के उपक्रम में उनके उपन्यासों को खँगालने के साथ–साथ उनकी कहानियों और वैचारिक साहित्य को भी खँगालता है।

लेखक रामबक्ष जी की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थापना है कि ''अपनी जीवन दृष्टि से ही उन्होंने समाज में किसानों के महत्व और उनकी भूमिका को समझा।'' इसी कारण किसानों के जीवन–यथार्थ को उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया।''[1] समाज में जिसका सबसे ज्यादा शोषण किसानों का ही हुआ लेकिन असमर्थता और संगठन से शोषणकारी ताकतों के विरूद्ध उनकी घृणा मुखर नहीं हो पाती और वह विनयशीलता के आवरण में दबी रहती है। प्रेमचंद ने इस आवरण को हटा दिया और इस तरह करोड़ों–करोड़ मूक भारतीय किसानों की भावनाओं को वाणी दी तथा समाज के शोषकों के प्रति किसानों की इस घृणा को प्रकट कर दिया'।[2] लेखक का यह निर्भान्त निष्कर्ष काबिलेगौर है। 'प्रेमचंद और भारतीय किसान' पुस्तक में सटीक मूल्यांकन करते हुए रामबक्ष लिखते हैं, ''प्रेमचन्द के साहित्य से भारतीय किसान अपने शोषकों को ज्यादा अच्छी तरह से पहचान सकता है और उसके शोषण तथा हथकंडों को जानकर उनसे बचने के उपाय भी ढूँढ सकता है। प्रेमचंद–साहित्य से आज का किसान अपने अतीत को झाँककर देख सकता है। .... किसानों के प्रति दया भाव तो अब तक अनेक रचनाकारों ने व्यक्त किया है, लेकिन उनके प्रतिनिधि बनकर बोलने वाले हिन्दी के पहले रचनाकार प्रेमचंद ही हुए।''[3]

प्रस्तुत पुस्तक आठ अध्यायों में विभाजित है–'पथ सन्धान और किसानों के महत्व की पहचान, सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधों के उद्घाटन का प्रयास, चिन्तन की परिपक्वता और स्वाधीनता आन्दोलन में किसानों की भूमिका, सर्जनात्मक उत्कर्ष और किसान, जीवन की जटिलता में अंतःप्रवेश, प्रेमचंद के साहित्य में किसानों के आर्थिक शोषण की प्रक्रिया, प्रेमचंद के साहित्य में किसानों का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन, प्रेमचंद की जीवन–दृष्टि और उपसंहार। 'पुस्तक शोध–प्रबंध का किंचित् संशोधित रूप हैं[4] लेखक के अनुसार उसने इसमें नए तथ्यों की खोज का प्रयास नहीं किया है लेकिन उसकी रूचि उपलब्ध तथ्यों के नए विश्लेषण की ओर ही रही है।[5] किन्तु विद्वान लेखक ने 'नए विश्लेषण' से अनेक नवीन तथ्य एवं स्थापनाएँ दी है।

'पथ सन्धान और किसानों के महत्व की पहचान' शीर्षक अध्याय में 1900 से 1919 तक का समय लिया गया है। रामबक्ष के अनुसार 'प्रेमचंद की रचनाएँ 1903 से मिलती है।[6] अतः यहीं से प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन की शुरूआत माननी चाहिए।[7] 1900 से 1919 तक के इस कालखण्ड की पड़ताल करते हुए प्रो0 रामबक्ष ने प्रेमचंद के बचपन के परिवेश के बाद अंग्रेजी राज्य में किसान, कांग्रेस की स्थापना के समय के परिवेश, राष्ट्रीय राजनीति और प्रेमचंद की रचनाओं की विवेचना की है–''टूटे–फूटे फूस के झोपड़े, मिट्टी की दीवारें, घरों के सामने कूड़े करकट के बड़े–बड़े ढेर, कीचड़ में लिपटी हुई भैंस, दुर्बल गायें ये सब सोचनीय दशा है। हड्डियाँ निकली हुई हैं, वे विपत्ति की मूर्तियाँ और दरिद्रता के जीवित चित्र हैं।'' (वरदान)। लेखक का निष्कर्ष है कि यहाँ प्रेमचंद की मूल संवेदना दर्शक की सहानुभूति की है, भोक्ता के दर्द की नहीं।''[8]

भारत की राष्ट्रीय राजनीति में किसानों का प्रवेश गाँधी जी के साथ हुआ। विपिन चन्द्रा लिखते हैं–1900 में वायसराय लार्ड कर्जन ने घोषणा की ''कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है। भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद दे सकूँ।''[9]अधिकांश अंग्रेज कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य ''राजनीतिक दृष्टि से प्रबुद्ध कुछ गिने–चुने भारतीयों के बीच सैद्धान्तिक बहस–मुबाहिसा चलाने तक सीमित रखना समझ रहे थे''[10] लेकिन उसी कांग्रेस के मंच से 1915 में किसानों के असंतोष का पता लगाने के लिए गाँधी जी बिहार गए! 1917 में चम्पारन में निलहे गोरे जमीदारों के खिलाफ किसानों के आन्दोंलन को संगठित किया और 1918 में खेड़ा में लगानबन्दी

आन्दोलन चलाया। राष्ट्रीय राजनीति में किसानों की जागरूकता के उद्देश्य से यह पहला कदम था। पथ सन्धान की समयावधि (1900–1918) में लेखक के अनुसार ''किसानों के क्रांतिकारी स्वरूप से अब तक प्रेमचंद परिचित नहीं थे हालांकि दूसरे वर्गों की नपुंसकता का उन्हें एहसास हो गया था, पर किसानों पर पक्की आस्था नहीं जम पायी थी। किसानों की संगठन शक्ति से भी वे अनभिज्ञ थे–अंतः स्वाधीनता आंदोलन में किसानों की भूमिका निर्णायक है, इस निष्कर्ष तक नहीं पहुँचे थे। कुल मिलाकर इस बीच का साहित्य किसानों के प्रति दया ओर ममता भाव से भरा हुआ है.... जमींदारों के अत्याचार का कारण जमींदारी व्यवस्था के भीतर न बताकर जमींदारी व्यवस्था की अराजकता को बताया गया है।''[11]

''सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधो के उदघाटन का प्रयास'' शीर्षक अध्याय में 1919 से 1929 तक के ऐतिहासिक कालखण्ड को समेटा गया है। उल्लेखनीय है कि विश्व इतिहास में यह समय प्रथम विश्व युद्ध और रूसी क्रांति जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी है। भारतवर्ष के इस कालखण्ड में न वकील, न अपील, न दलील वाला काला बिल रोलेट एक्ट पास हुआ था। जिसमें पुलिस को लोगों को गिरफ्तार करने, अदालत में पेश किये बिना ही जेल में रखने तक ही संभावना वाले लोगों पर गुप्त अदालती कार्यवाही करने का हक प्रदान किया गया था। इसके विरोध में गांधी जी ने दमनकारी कानूनों की अवज्ञा करने के संकल्प के साथ सत्याग्रह सभा शुरू की। सारे देश में 6 अप्रैल 1919 को आम हड़ताल का आह्वान किया गया। इसके बाद नागरिक अवज्ञा शुरू होने वाली थी।[13] 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग की दुखद दुर्घटना घटी। जो कि युद्ध के कर्ज और जनरल ओ'डायर के सिपाही के भर्ती के बर्बर तरीके.... तथा डा0 सत्यपाल और डा0 सैफुद्दीन किचलु जैसे मुख्य नेताओं के गिरफ्ताार करने के परिणाम स्वरूप अमृतसर का जन आक्रोश उमड़ा था.....अवज्ञापूर्वक एकत्रित हुई जनता पर जनरल डायर ने सारे पंजाब में आतंक फैलाने की इच्छा से बिना किसी चेतावनी के निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया।'[14] इस हत्याकाण्ड का उद्देश्य समस्त भारतीय जनता को आतंकित करना था रजनी पामदत्त ने लिखा है कि ''भारत में उस समय दमन का कितना जबरदस्त सिलसिला चल रहा था कि कांग्रेस कमेटी के नेताओं को भी इस घटना की जानकारी घटना के चार महीने बाद हुई और लगभग आठ महीनों तक इस हत्याकाण्ड के किसी भी समाचार को न तो अखबारों में छपने दिया और न उसे ब्रिटिश पार्लियामेंट तथा ब्रिटिश जनता के सामने आने दिया।[15] और इकत्तीस दिसम्बर 1929 को रावी के तट पर जनता की एक अपार भीड़ ने जवाहर लाल नेहरू को राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को फहराते हुए देखा उसने सुना नेहरू कह रहे थे कि ब्रिटिश सत्ता के सामने अब अधिक झुकना मनुष्या और ईश्वर दोनों के विरूद्ध अपराध है।[16] इस ऐतिहासिक परिवेश में भारतीय जनमानस में उद्वेलन आरम्भ हुआं लेखक ने उस समय के प्रेमचंद की मनोदशा को उद्धृत किया है उसी समय के प्रेमचंद गोरखपुर प्रवास के दौरान आराम कुर्सी पर लेटे दरवाजे पर अखबार पढ़ रहे थे इन्सपेक्टर की मोटरकार वहाँ से निकली। प्रेमचंद उठे नही। बुलाये जाने पर–इन्सपेक्टर–तुम बड़े मगरूर हूँ। तुम्हारा अफसर दरवाजे से निकल जाता है। उठकर सलाम भी नही करतें?'' मै जब स्कूल में रहता हूँ तब नौकर हूँ बाद में अपने घर का बादशाह हूँ'...... प्रेमचंद की गाय कलेक्टर के हाते में घूसी। उस घटना में प्रेमचंद को बुलाया गया'' आपने मुझे क्यों याद किया?'' 'तुम्हारी गाय मेरे हाते में आई। मै उसे गोली मार देता हम अंग्रेज हैं।' ''साहब, आपको गोली मारनी थी तो मुझे क्यों बुलाया? आप जो चाहें सो करें या आप मेरे खड़े रहते गोली मारते?'' ''मै आज छोड़ देता हूँ आइन्दा आई तो गोली मार दूँगा।'' ''आप गोली मार दीजिए पर मुझे मत बुलाइएगा'' प्रेमचंद के स्वभाव की यह एक बानगी है, आत्मसम्मान, दर्प और गर्व जो इस वार्तालाप में है वह प्रेमचंद की उर्जस्वित चेतना का आधार है जाहिर है लेखक की अर्न्तदृष्टि एक युग नायक कथाकार और तत्कालीन ऐतिहासिक परिवेश के द्वव्द को उद्घाटित करने की तरफ है।

आलोचक के अनुसार प्रेमचंद का प्रेमाश्रम जब आया तब सरस्वती और मर्यादा धूमधाम से निकल रही थी। प्रेमाश्रम में किसानों के जीवन का वर्णन कम और दूसरे वर्गों के साथ उनके संबंध कैसे है इसका वर्णन ज्यादा है।[17] प्रेमाश्रम में उठान जितना जबरदस्त है अंत उतना ही कमजोर। क्योंकि शुरूआत में धैर्य है और खत्म करने में जल्दबाजी। अधिकार वर्ग किसानों का हमदर्द बिल्कुल नही होता। अंग्रेजी राज किसानों का सबसे बड़ा और प्रधान दुश्मन है। इसे प्रेमाश्रम का लेखक दिखा नही पाता।[18] प्रेमचंद इसे दिखा नहीं पाते। सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधों के उद्घाटन का प्रयास–1919–1929 तक के कालखण्ड का जो चयन लेखन ने किया है उसी अवधि में 16 फरवरी 1921 को प्रेमचंद की सरकारी नौकरी खत्म हो गई थी। जिसका वर्णन कलम का मजदूर प्रेमचंद में किया गया है। प्रेमचंद के अनुसार ''मै भलीभाँति समझ गया था कि सरकारी नौकरी में जी हजूरी और पोचेपन के सिवाय कुछ नही है। आत्मसम्मान, आत्मज्ञान, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का तो यहाँ चूहे बिल्ली का संबंध है। परिस्थिति से लाचार होकर पहले तो मैं इस विष घूँट को पीकर इसी की ज्वाला दबाता रहा, पर असहयोग की हवा लगते ही वह हवा भभक उठी।''[20]

लेखक के अनुसार ''स्वाधीनता आन्दोलन के राजनीतिक नेताओं ने यू ंतो किसानों और जमीदारों के आपसे संघर्ष पर ही पर्दा डालने का प्रयास किया–पर जमीदार के कर्मचारियों के अत्याचार की ओर तो उनकी दृष्टि कभी गई ही नही। यह रचनाकार प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि है, जिसने शोषण के इस चक्र में सबसे छोटी कड़ी–कारिन्दा और चपरासी को भी देख लिया है।'' चरित्रों की जाँच का साहस 'रंगभूमि', के माध्यम से दिखाया–''प्रेमाश्रम में किसान मुख्य है यहाँ मुख्य शत्रु बदल गया है।''[22] यहाँ लेखक का दार्शनिक विश्लेषण देखा जा सकता है–''देश का पहला राजनीतिक आंदोलन शुरू हुआ।

लोग जेल गये, जुलूस निकले, लाठी चार्ज हूई पिटाई हुई । कुल मिलाकर प्रजापक्ष एक तरफ, राज सत्ताधारी दूसरी तरफ। जीवन खेल का (युद्ध का) मैदान बना । ऐसी हलत में प्रेमाश्रम में कब तक बैठा जा सकता है । मायाशंकर विनय बन कर आया । इस तरह उपन्यास का नामकरण हुआ – रंगभूमि[23] लेखक के आनुसार इसमेंवैयक्तिक नहीं रह जाता बल्कि वह पूँजीवाद और सामंतवाद का संघर्ष बन जाता है। असहयोग आंदोलन की हार के बावजूद जो आशावाद प्रेमचंद जैसे बुद्धिजीवियों और जनता में बच गया था। उसी की अभिव्यक्ति रंगभूमि में सूरदास से कराई गई है–लेखक स्थापित निष्कर्ष का समर्थन करता है– ''कुल मिलाकर उपन्यास का अंत ट्रैजिक रहा और संघर्ष में जान सेवक की अंग्रेजी साम्राज्यवादी क्लार्क की, यानी की शहर की अर्थात साम्राज्यवाद की जीत हुई। सूरदास, विनय अर्थात देहात (भारत) पराजित हुआ।''[24] लेखक का निष्कर्ष उल्लेखनीय है–प्रेमचंद ने सबसे अधिक कहानियाँ 1924 में लिखी। इस वर्ष की कहानियों में उनके आदर्शवाद का दबाव नहीं के बराबर है।......... मुक्तिमार्ग में न तो उपदेश है और न सुधार की कामना है। यह प्रेमचंद ने किसान का साधारण और वास्तविक जीवन चित्रित किया है। इसमें किसान और किसान का संबंध है..........'मुक्तिधन' और 'सवा सेर गेहूँ' में किसानों की बदहाली का कारण प्रकिया की खोज है। 'मुक्तिधन' में प्रेमचंद 'आदर्शवादी' हो गए हैं पर सवा सेर गेहूँ का

कर्ज लेकर आजन्म गुलामी लिखाने वाले शंकर की कहानी एकदम यथार्थवादी है[25]

लेखक के अनुसार जब असहयोग आंदोलन खत्म हुआ तब चौपाल और बैठक में हो रही राजनीति और सत्याग्रह की चर्चाएं भी बन्द हो गईं, उनके स्थान पर फिर घर, गाँव के छोटे–छोटे झगड़े चर्चा में आएं। असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद मुस्लिम सांप्रदायिक नेताओं ने कुर्बानी के अपने अधिकार का इस्तेमाल करना शुरू किया। हिन्दूवादियों ने शुद्धि आंदोलन चलाया और हिन्दू संगठन बनाने पर बल दिया।'' प्रेमचंद ने दोनों प्रवृत्तियों से संघर्ष किया क्योंकि इससे राष्ट्रीय एकता खण्डीत होती और स्वराज्य आंदोलन खत्म होता है।[26] असहयोग आंदोलन की समाप्ति की अवधी में प्रेमचंद साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो गये थे उपन्यास सम्राट बन गये थे। उनमें अपने कलम के प्रति अतिरिक्त आत्मविश्वास बढ़ा जिससे असावधानी भी आई और रचनात्मक शैथिल्य की मात्रा भी बढ़ी। उपन्यास, कहानियों में अवांछित घटनाओं प्रसंगो की मात्रा बढ़ने लगी।[27] ''ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्वाधीनता आंदोलन में निराशा और असमर्थता आई तो साहित्य में भी मन्थरता और स्थिरता का पदार्पण हुआ। 'सवा सेर गेहूँ' के बाद तीन चार वर्षों तक प्रेमचंद की कला में रास हुआ है। रंगभूमि की तुलना में कायाकल्प उनकी कमजोर रचना है। रचनाकार प्रेमचंद को नई शक्ति 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' से मिली। गबन 1927 इसकी मिसाल है।''[28] 'निर्मला', कायाकल्प, प्रेमा, प्रतिज्ञा की समीक्षा करते हुए लेखक स्थापित निष्कर्षों की तह में गया है– कायकल्प प्रेमचंद का अत्यन्त कमजोर उपन्यास है। स्वतंत्रता आंदोलन के कमजोर पड़ने से हिस्दुस्तान के बौद्धिक वातावरण में जो निराशा छायी हुई थी कायाकल्प में उसी का एक छत्र राज्य है।''[29] प्रेमचंद ने 1927 में प्रेमा प्रतिज्ञा के नाम से छपवाया। यह परिवर्तन और पुर्नलेखन कम महत्वपूर्ण नहीं है। इससे प्रेमचंद के रचनात्मक शैथिल्य पता चलता है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रतिज्ञा, प्रेमा के बाद की रचना होते हुए भी कमजोर है।[30] 1927 में प्रेमचंद और कृष्णबिहारी मिश्र माधुरी के सम्पादक बने। आलोचक के अनुसार अन्य सामाजिक साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों में प्रेमचंद कोई परिवर्तन नही कर सकें। पर उसे साम्प्रदायिकता विरोधी पत्रिका जरूर बना दिया।[31] 'सर्जनात्मक विकास और किसान के वर्गीय संबंधों के उद्घाटन के प्रयास' में प्रेमचंद ने इस दौर के साहित्य में दो काम किये। एक तो किसान के महत्व को प्रतिष्ठित किया है और दूसरे किसान को अन्य वर्गों के संबंध में उपस्थित किया है। इस तरह किसान वर्णन करते हुए उन्होंने सम्पूर्ण समाज का वर्णन किया है।''[32]

चिन्तन की परिपक्वता और स्वाधीनता आंदोलन की भूमिका के अंतर्गत रामबक्ष जी ने 1930 से 1936 तक का समय लिया है। इस दशक का आरम्भ दूसरे असहयोग आंदोलन से हुआ था।

इस अवधि की राष्ट्रीय घटनाओं में नागरिक अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह, चन्द्रशेखर आजाद की वीरगति, गांधी इरविन समझौता, भगत सिंह सुखदेव और राजगुरू को फांसी, दूसरा गोलमेज सम्मेलन आदि प्रमुख घटनाएं रहीं। विपीन चन्द्रा स्वतंत्रता संग्राम पुस्तक में लिखते हैं– स्वतंत्रता के एक घोषणा पत्र को 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में अधिक से अधिक लोगों तक सार्वजनिक ढंग से पहुँचाया गया था। माना गया था कि इस तिथि को नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू होगा। इस तिथि को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया।''[33] 6 मार्च 1930 को गांधी जी ने इरविन को पत्र लिखते हुए उन बुराइयों को तत्काल समाप्त करने की मांग की जिनका जिक्र उनके ग्यारह सूत्रीय लेख (यंग इण्डिया में प्रकाशित) में था। उन्होंने पत्र में यह संकेत किया था कि यदि मांगे स्वीकृत नही हुईं। तो उन्हें ब्रितानी कानूनों को ऐसे तरीके से तोड़ना पड़ेगा जो किसानों को ग्राह्य होगा।[34] अप्रैल मई 1930 की गर्मी में कांग्रेस के छोटे–छोटे स्वयंसेवकों ने नमक कानून का उल्लंघन किया।[35] उ0 प्र0 में किसानों और जमीदारों से राजस्व न अदा करने का आह्वान किया गया। अक्टूबर 1930 को किसानों से कहा गया कि वे जमीदारों को लगान न दें।[36] 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फाँसी पर लटका दिया गया। रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने सन् 1932 के सरकार के साम्प्रदायिक निर्णय में हिन्दुओं, हरिजनों और मुसलमानों के लिए संघीय विधान परिषद में पृथक निर्वाचक मण्डल की व्यवस्था दी।[37] इस परिवेश में प्रेमचंद की रचनाधर्मिता के प्रभावी कारकों की पहचान करते हुए उनकी तेजस्विता को आलोचक रामबक्ष ने रेखांकित किया है–''प्रेमचंद में भी उत्साह आया और उन्होंने मार्च 1930 ासे हंस नामक मासिक पत्र निकालना शुरू किया। इसका उद्देश्य था– स्वाधीनता आंदोलन में सहयोग। वास्तव में इस आंदोलन से प्रेमचंद की मन्थरता टूटी और उनके साहित्य में तेजस्वी चिंतन की धारा बही।''[38] पत्रकारिता के महत्व को पहचानते हुए लेखक रेखांकित करता है कि गबन, गोदान, पूस की रात, दो बैलों की कथा और कफन जैसी कलात्मक रचनाओं के पीछे हंस और जागरण की जुझारू पत्रकारिता रही है।''[39] प्रेमचंद के रचना मानस की पड़ताल करते हुए आलोचक कहता है कि प्रेमचंद का दिहाती मन आदर्शवादी है शहरी मन यथार्थवादी है। यथार्थवादी संयुक्त परिवार को टूटते हुए दिखाता है इस टूटन पर रोता है आदर्शवाद। आदर्शवादी मन ने सूरदास, सुजान भगत और होरी की रचना की है। यथार्थवादी मानस ने ज्ञान शंकर जान सेवक, राय साहब और मिस्टर खन्ना को चित्रित किया है। देहाती मन शांतिप्रिय, व्यवस्थाप्रिय और सामाजिक है। शहरी मानस तनाव भरा विद्रोही और राजनीतिक है। जब उनकी रचना प्रक्रिया में देहात हावी होता है तो सामाजिक साहित्य की सृष्टि होती है, जब उन पर शहर का दबाव रहता है तो रचना का परिप्रेक्ष्य राजनीतिक हो जाता है।''[40]

वस्तुतः इस प्रकार का द्वैत प्रेमचंद के आदर्शवाद और यथार्थवाद को समझने–समझाने का ज्यादा ही सरल तरीका होगा, कायेंकि ग्रामीण परिवेश के समूचे चित्रण में प्रेमचंद की यथार्थवादी कला–युक्ति का कायल होना ही पड़ता है। आलोचक का कहना है– वेचारिक रूप से प्रेमचंद गांधी के साथ थे और गांधी क्रांतिकारियों के विरूद्ध थें। क्योंकि गांधी के मार्ग में क्रांति की भीषणता के बिना क्रांति के लाभ प्राप्त होने की संभावना थी, यह भी एक सरलीकृत निष्कर्ष है, गांधियन क्रांति की सहजता और भीषणता दोनों पर अब नयी सोच बन रही हैं। प्रेमचंद आदर्श समाज की कल्पना ब्रिटेन और अमेरिकी समाज की नहीं बल्कि सोवियत रूस के करीब थी। लेखक लेखक भौतिकतावाद से साम्राज्यवाद तक की यात्रा का सटीक विश्लेषण करता है– भौतिकतावाद के मूल में निहित मनुष्य की स्वार्थ बुद्धि को औद्योगिकरण ने बल पहुँचाया। इससे मनुष्य अपने मूल रूप से हट गया औश्र उस पर कृत्रिमता का आवरण छा गया। मनुष्य की मानवीयता पर पर्दा पड़ते हुए मशीनी युग में स्वार्थ बुद्धि विकराल रूप से प्रकट हुई और व्यवसायवाद और राष्ट्रवाद का उदय हुआ। राष्ट्रवाद ने अन्य देशों को गुलाम बनाने की ओर प्रेरित किया और व्यवसायवाद ने गुलाम देशों को माल बेचने वाला बाजार बना दिया। 'चिंतन की परिपक्वता' शीर्षक के अंतर्गत वो कहते हैं– '' वास्तव में प्रेमचंद ने साहित्य के विषय की प्रजातांत्रिकता का पक्ष लिया है। एक तरफ उन्होंने विषय की 'क्लासिकल–महानता' की धारणा का विरोध किया, दूसरी तरफ प्यूरिटन मनोवृत्ति के चिंतको का भी विरोध किया।''[41]

लेखन ने 'सर्जनात्मक उत्कर्ष और किसानी जीवन की जटिलता में अंतः प्रवेश' नामक शीर्षक ने लेखक ने 1930–1936 तक का कालखण्ड लिया है। गबन उपन्यास के अंत में प्रेमचंद ने शहर

बनाम गांव के द्वन्द को सामने रखा और दिखाया कि चैन की जिंदगी सिर्फ गांव में ही बिताई जा सकती है।''[42] कर्मभूमि प्रेमंचन्द का बहुत ही कमजोर उपन्यास जिसमें नवीन कल्पना और मौलिकता का अभाव है।[43] .... फिर भी देश प्रेम, इतिहास चेतना और आशावाद उपन्यास के मूल में है।[44] गोदान उपन्यास में किसान का सहज सरल आंतरिक जीवन जैसा कि वह है सामने रखने का प्रयास किया गया है।[45] इस उपन्यास में उनका प्रयास किसानों के आंतरिक भावात्मक और सामाजिक जीवन का चित्रण करना रहा है। इस उपन्यास की धुरी किसान का दैनिक जीवन है। किसान जमीदार के संबंध के साथ सारे गांव के मनोभावों को प्रेमचंद ने चित्रित कर दिया है। गोदान में एक–एक घटना को इतनी तन्मयता और सावधानी से चुना है कि भारतीय किसान की सूक्ष्म जानकारी रखने वाले पाठक को भी सुखद आश्चर्य होता है। इस उपन्यास में जमीदार को एक पतनोन्मुख शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। परंतु महाजनों को भी कहीं कमजोर नही दिखाया है। वास्तव में होरी समस्त भारतीय किसानों का प्रतिनिधि नही है बल्कि ऐतिहासिक दौर में लुप्त होता हुआ मिटता हुआ भारतीय किसान है उसकी ट्रेजडी अनिवार्य है।[47] वास्तव में गोदान के अंत में करूण प्रसंग सिर्फ होरी की मौत नही हैं जैसा होरी है उसकी मौत की करूणा का एहसास तब होता है जब इसके कारण धनिया गिर जाती है, वह धनिया जो किसी को कुछ नही समझती थी। उसकी शक्ति का स्रोत यह ढीला–ढाला गमखोर होरी ही था।[48]

रामबक्ष के अनुसार प्रेमचंद का चिंतन जीवन दृष्टि और कलात्मकता की दृष्टि से कफन में पिछली परम्परा को नकारती हुई नए आदर्शवाद की घोषणा करता है।[49] समाज मे निहित अमानवीयता की सीमा इस कहानी में है जबकि घीसू और माधव में मानवीय भावों का चिन्ह भी नही बचा है। इस कहानी में प्रेमंचद ने आशावाद को नहीं दिखाया है। बल्कि इसमें यथार्थवादी निराशा है।''[50] यह निराशा व्यवस्था के वास्तविक ज्ञान से पैदा हुई है। अतः इसमे व्यवस्था की क्रूरता का एहसास ज्यादा है। कफन और मंगलसूत्र का नायक राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रकृति ओर प्रगति से काफी निराश लगता है। साथ ही विकल्प के रूप में नई शक्ति भी उसके सामने नही है। यह प्रेमचंद के आदर्शवाद की पराजय है। लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इस व्यवस्था से लड़ने के लिए मात्र शक्ति की जरूरत नही है। सम्यक विवेक और सामाजिक सक्रियता भी चाहिए।[51]

प्रेमचंद का साहित्य जनतांत्रिक भाव बोध पर टिका हुआ है। जहाँ सभी मनुष्य बराबर हैं। एक के द्वारा दूसरे का शोषण गलत है अवैध है–चाहे उसके समर्थन में कितने ही पवित्र सिद्धान्तों को खड़ा किया गया हो। स्पष्ट है आलोचक रामबक्ष ने प्रेमचंद के रचनाओं की तत्वदर्शी विवेचना करते हुए जो निष्कर्ष दिये हैं। उसे प्रेमचंद के अध्ययनकर्ताओं को नवीन संदर्भ मिलते रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 279, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
2. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 279 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 279, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, प्रस्तावना प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, प्रस्तावना प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, प्रस्तावना प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 14 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन,पृ0 31 नई दिल्ली।
9. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 56 प्रकाशक–पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
10. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 55, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
11. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 41–42 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. गांधी जी और स्वाधीनता आंदोलन – जवाहरलाल नेहरू, पृ0 18।
13. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 97 पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
14. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 98–99 पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
15. आज का भारत– रजनी पामदत्त, पृ0 348, आठवां संस्करण मैकमिलन पब्लिशर इण्डिया लिमिटेड।
16. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 115, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
17. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 57, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 57, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 60, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
20. कलम का मजदूर प्रेमचंद– मदनगोपाल, पृ0 127 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
21. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 58 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
22. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 68–69, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
23. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 68, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
24. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 74, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
25. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 75, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
26. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 78, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
27. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 79, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
28. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 80, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
29. समालोचक–उपन्यास शीर्षक लेख–जनवरी 1925।
30. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 84, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
31. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 85, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
32. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 92प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
33. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 123, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।

34. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 215, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
35. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 136, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
36. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 128, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
37. स्वतंत्रता संग्राम– विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरूण डे, पृ0 141, पैंग्विन रैंडम हाउस पैंग्विन इण्डिया, नई दिल्ली।
38. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 97 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
39. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 98–99, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
40. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 101, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
41. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 136, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
42. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 157, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
43. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 160, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
44. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 161प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
45. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 176 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
46. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 176 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
47. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 176 प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
48. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 177, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
49. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 177, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
50. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 178, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
51. प्रेमंचद और भारतीय किसान– प्रो0 रामबक्ष, पृ0 186, प्रथम संस्करण 2012, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।